मनोजमंजरी

प्रथम कलिका

अर्थात् ।

शृङ्गार रस के अपूर्व कवित्तों का संग्रह ।

डुमरावँनिवासी पं० नकछेदी तिवारी उपनाम
अजान कवि द्वारा संगृहीत ।
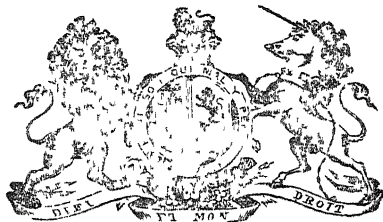
यह पुस्तक बनारस भारतजीवन प्रेस में मिलेगी ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई ।

सन् १८९७ ई० ।

चौथी बार १०००]　　　　[मूल्य ।/

श्रीगणेशाय नमः ।

मनोजमञ्जरी ।

कबित्त ।

रोहनीरमन की मरीची सी सुघर सौरी सोहिनी सरस महामोहिनी के थल सी । श्री-पति सुकबि बाल रबि के किरिन ऐसी मदन मुकुर सी अमल गङ्गजल सी ॥ ग्वालि गरबीली तेरे गात की गुराई चपलानि की निकाई ऐसी लागति सहल सी । माखन कहल सी पराग के चहल सी गुलाब के पहल सी नरम मखमल सी ॥ १ ॥

गोरी गरबीली उठी ऊँघत उघारे गात देव कबि नीलपट लपटी कपट सी । भानु की कि-रिन उदै सान कन्दरा तें छूटि शोभ छबि कीनी तम तोम पै दपट सी ॥ सोने की सलाका स्याम पेटी तें लपेटी कढ़ि पन्ना तें निकासी पोखराज के झपट सी । नील घन तड़िता सु धाय धुंध धूं-धर तें धाय कर धसी दावा पावक लपट सी ॥२॥

किरिन सी कढ़ि आई अङ्गना उघारे गात

कवि पजनेस छैल छिति पै छहरि गो। उझकि झपाक मुख फेरि प्यारे रुख ओर हेरि हरि हरखि हिमञ्चल पै अरिगो॥ आधो मुख मलत अबीर तें मुकेस हाय नख-रेख चिन्हित उरोजन पै भ- रिगो। मानो अर्ध चन्द्र को प्रकास अर्ध चन्द्रिका पैं ह्वैकै चन्द्र चूर चन्द्रचूर पै बगरिगो॥ ३॥

छहरै छबीली छटा छूटि छितिमण्डल पै उमग उजेरी महा ओज उजबक सी। कवि प- जनेस कंज मंजुलमुखी के गात उपमाऽधिकात कल कुन्दन तबक सी॥ फैली दीप दीप दीप दीपति दिपति जाकी दीपमालिका की रही दीपक दबक सी। परत न ताब लखि मुख म- हताब जब निकसी सिताब आफताब के भ भक सी॥ ४॥

घूंघट खुलत उभै उलट परैगो देव उद्धम मनोज जग जुद्ध जूट परै गो। को कहै अलीक बात सो कहै सरोख सिव लोक तिहूं लोक की लुनाई लूटि परैगो। दैयन दुराय मुख नूतन तरैयन को मण्डल औ मटक चटक टूट परै गो।

तो चितै सकोच मोच मद मुरछा ह्वै एरी छोर तै छपाकर छता सो छूटि परै गो ॥ ५ ॥

गहरी गुराई तें प्रथम चूरि चामीकर चम्पक के ऊपर बहुरि पांव रोप्यो है। तीसरे अमल अरविन्द आभा बस करि हँस करि तड़िता को तोयद में तोप्यो है ॥ भनत कविन्द तेरे मान समै सौतैं कहा सुरबनितान को गुमान जात लोप्यो है। मेरे जान आली आज ऐंड़-भरो तेरो मुख सौंहें तान भौंहें री कलानिधि पै कोप्यो है ॥ ६ ॥

सुखमा के सिंधु को सिँगार के सुमन्दर तें मथि के सुरूप सुधा सुख सों निकारे हैं। करि उपचारे तासों स्वच्छता उतारे तामें सौरभ सोहाग औ सुहास रस डारे हैं ॥ कबि रसरङ्ग ताको सत जो निथारे तासों राधिकाबदन बेस बिधि ने सँवारे हैं। बदन सँवारि कै जो हाथ धोय डारे सोई जल भयो चन्द कर झारे भये तारे हैं ॥ ७ ॥

कोमलता कञ्ज तें गुलाब तें सुगन्ध लै कै चन्द सो प्रकास लै कै उदित उजेरो है। रूप

रति-आनन सों चातुरी सुजानन सों नीर लै निवानन सों कौतुक निवेरो है ॥ ठाकुर बिचारि कै बनायो बिधि कारीगर रचना निहारि कान्ह होत चित चेरो है। साने सों सुरङ्ग लै सवाद लै सुधा को बसुधा को सुख लूटि कै बनायो मुख तेरो है ॥ ८ ॥

आनँद को कन्द वृषभानुजा को मुखचन्द लीला ही तें मोहन के मानस को चोरे है। दूजो तैसो रचिवे को चाहत बिरञ्चि नित ससि को बनावे अजौं मन को न मोरे है ॥ फेरत है सान आसमान पै चढ़ाय फिर पानिप चढाइवे को वारिध में बोरे है। राधिका के आनन के सम ना विलोकि बिधि टूक टूक तोरे पुनि टूक टूक जोरे है ॥ ९ ॥

अंग अरसौंहैं छबि अधरन सौं हैं चढ़ी आलस की भौंहें धरे आभा रति रोज की। सुकबि कलस तैसे लोचन पगे हैं नेह जिनमें निकाई अरुनोदय सरोज की ॥ आछी छबि छाकि मंद मंद मुसकान लागी विचल बिलोकि तन भूखन के फौज की। राजै रदमंडली कपोल

मंडली मे मानो रूप के खजाने पर मोहर म-
नोज की ॥ १० ॥

कैला भई कोयल कुरङ्ग बार कारे किये
कूटि कूटि केहरी की लङ्क लङ्क दहली । जरि
जरि जम्बूनद मूंगा बदरङ्ग होत अंग फाट्यो
दाड़िम त्वचा भुजङ्ग बदली ॥ एरी चन्दमुखी
तू कलंकी कियो चन्दहू को बोले व्रजचन्द सो
किसोर आप अदली । छार मुण्ड डारे गजराज
ते पुकार करै पुण्डरीक डूब्यो री कपूर खायो
कदली ॥ ११ ॥

हिमकर बैरी और हाथी औ हरिन हरि
खञ्जरीट बैरी तेरो मीन औ मराल री । केदली
कपूर फेर कोकिल की बैरिनि तू दाडिम बँधूक
बिम्ब बैरी है सेवार री ॥ सम्पा चम्पा चञ्चरीक
कीर कंबु हीरा लाल जमुना औ सौति बैरी कु-
न्दन औ व्याल री । एते सबै बैरी तेरे एक हितू
श्याम तेरे श्यामहूं ते बैर तेरो ह्वै है कौन
हाल री ॥ १२ ॥

सुखमा-सदन भूरिभूषित बदन जाको सो-
हत सलोनो चारु चन्दहू तें चोखो सो । छाड़ि

कंज मंजु घेरि रहैं भौंर पुंज पाय अङ्ग वारो सौरभ समूह अनजोखो सो ॥ बचन विलास वेस जाको हनुमान कहै रातो दिन रहत पियूषहू पै रोखो सो। छवि मों अपार बैठी भीतर अगार तऊ बार बार होतो वीर वीजुरी को धोखो मो ॥ १३ ॥

सवैया।

मद मैन सों यों अलसानी लसै जनु जागी भलै भरि जामिनी है। मृदु बैन सुने हनुमान कहै कहा कोकिल मंजु कलामिनी है। चकचौंध सी लागै लखै अँखियां तब कैसे कहौं रति कामिनी है ॥ परजंक पै सोहै सोहाग-भरी यों मनो थिर ह्वै रही दामिनी है ॥ १४ ॥

ललना-मुख इन्दु तें दूनो लसै अरविन्द बसै चख बार सी लै। मुसकानि मनोहर ज्योति महा कहि मिश्र जुबान सुधारसी लै ॥ तन ओप करै दुति चम्पक लोप सची सकुचै प्रति पारसी लै। कहि आवै न रूप-सिपारसी यातें दिखावै लला कर आरसी लै ॥ १५ ॥

छूटी चिकैं परी प्यारी जहाँ परजंक तें फैलि

रही प्रभा भूपर। लै बरजोरी करी पजनेस वसीकर सी तसबीर वधू पर ॥ हा सखी पीन पयोधर पै नख लागे लला ललचात तिहूं पर। मानो खराद चढ़े रवि की किरनैं उड़ी आन सुमेर के ऊपर ॥ १६ ॥

चन्द कलङ्की कहा करिहै सर कोकिल कीर कपोत लजाने। बिद्रुम हेम करी अहि केहरि कञ्जकली औ अनार के दाने ॥ मीन सरासन धूम की रेख मलूक सरोवर कम्बु भुलाने। ऐसी भई नहिँ है जग में नहीं होयगी नारि कहा कवि जाने ॥ १७ ॥

जासु की दीपति दीप तें सौ गुनी दामिनि कुन्दन केसरी आइका। काम की खानि सदा मृदुबानि सनेह छकी छिति में छबि-छाइका ॥ अंग अनूपम को बरनै सब अंगन पीतम की सुखदाइका। मानो रची छबि मूरति मोहिनी श्रीधर ऐसी बखानत नाइका ॥ १८ ॥

गति मन्द यों जाकी मजा को लखै हँसी होत गयन्द के चाल की है। मुख हेर कै चन्द

लजोई रहै रुचि को कहै कंज कमाल की है ॥ हनुमान नखावली पै तिय के अवली परै फीको प्रवाल को है। दवि दामिनी जात प्रभा निरखे कितनो छबि मंजु मसाल की है ॥ १९ ॥

को रति है अरु कौन रमा उमा छूटी लटैं निचुरै गुंदी मोती। हाय अनूठे उरोज उठे भये मैन तुठे अरु और है को ती ॥ त्यौं कबि ग्वाल नदी तट न्हाय खड़ी लड़ी रूप की सुन्दरजोती। मोरति नार मरोरति भौंहन चोरति चित्त नि-चोरति धोती ॥ २० ॥

कबित्त।

कोऊ कहै है कलङ्क कोऊ कहै सिन्धु पङ्क कोऊ कहै छाया है तमोगुन के भास की। कोऊ कहै मृगमद कोऊ कहै राहुरद कोऊ कहै नील-गिरि आभा आस पास की ॥ भंजन जू मेरे जान चन्द्रमा को छील विधि राधे को बनायो मुख सोभा के बिलास की। ता दिन तें छाती छेद भयो है छपाकर के वार पार दीखत है नीलिमा अकास की ॥ २१ ॥

खरी खण्ड तीसरे रँगीली रंगरावटी में तकि

ताकी ओर छकि रह्यो नँदनन्द है। कालिदास बीचन दरीचन ह्वै झलकत छवि की मरीचन की झलक अमन्द है॥ लोक देखि भरमै कहाँ धौं यह घर में सु रगमग्यो जगमग्यो ज्योतिन को कन्द है। लालन की माल है कि ज्वालन की जाल कि चामीकर चपला कि रवि है कि चन्द है॥ २२॥

प्यारी तुव अङ्गनि की उमगी सुबास सोई लागी हरिचन्दन में इन्दिरा के घर में। मालती लताबन में सेवती गुलाबन में मृगमद घनसार अम्बर अगर में॥ उकल अछेह छवि छाई पुनि छिति पर देखियत सोई मन मानिक मुकर में। चम्पकबनी में चिरागन की अनी में चारु चन्द की कला में चपला में चामीकर में॥ २३॥

वह जो प्रकाशमान लागत बिभावरी में ये तो आठो जामहू विमल ज्योति धारिये। वाकै अङ्क राजत कलङ्क रङ्क राव सदा याके हृदये में बसै मोहन मुरारिये॥ वाको बपु छीन दिनप्रति अवलोकियत याके अंग पूरन प्रभा सों प्रेम प्यारिये। कहै कबि राम छविधाम प्रानप्यारी ये जू

राधे-मुखचन्द पै सरद चन्द वारिये ॥ २४ ॥

सुन्दर बदन राधे सोभा को सदन तेरो बदन बनायो चारबदन बनाय कै । ताकी रुचि लेन को उदित भयो रैनपति राख्यो मति मूढ़ निज कर बगराय कै ॥ कहै कबि चिन्तामनि ताहि निसि चोर जानि दियो है सजाय पाकसासन रिसाय कै । यातें निसि फेरै अमरावती के आस पास मुख मे कलङ्क मिस कालिमा लगाय कै॥२५॥

जो पै मुख प्यारी को बताऊँ चारु चन्द सो मैं तो पै रहै रातही मैं ज्योतिन के जोहिनी । याको तो दिवाकर के तेजहू तें तेज जो पै कहूं भानु तौ न रैन होय सोहिनी ॥ ग्वाल कबि यातें मुख सुखमाहिँ मुख है जू सो सुख सो सोई अति आनँद की बोहिनी । आँख ते न देखी सुनी कान ते न ऐसी जोति जैसी ब्रषभानु की दुलारी मनमोहिनी ॥ २६ ॥

सोभापुंज-सानी राधा रानी को सुमुख देख चौंकि चतुरानन सुचित्त में सराहै है। मेरी सृष्टि रचना में चारु एक चन्द्रमा है देखो सम है न याके वुद्धि यों ईमाहै है ॥ कहै तोष हरि तौले

तबहीं तुला पै दोऊ एक तो अचल दूजो नभ अवगाहे है। सोच सरमाय के सु मानो तारो तोमन को नाय नाय तामें ताहि तुल्य कियो चाहे है ॥ २७ ॥

कामिनी मदन गजगामिनी विलोकि आई दामिनी न पाई है गुराई गोरे गात सी। बिधु मानसर तें सरद ससिकर तें रसेस के मुकर तें अधिक अवदात सी ॥ श्रीपति सुजान परखत हरषत मन नैनन को सितासी नवल नव बात सी। जाही हारि जात सी जुही बिदारि जात सी बिकास बारिजात सी सुबास पारिजात सी॥२८॥

टारि जात अलि की नेवारिन के आरि जात लागि जात सहज बयारि जाके तन की। श्री-पति सुजान जाही जूथिका बिदारि जाति महिमा बिगारिजात बारिजात बन की ॥ भरि जाति मालती गुलाब मद मारिजात सौरभ उतारि जात केतकी सुघन की। बारिजात तगर अगर धूप हारि जात राह पारिजात पारिजात के सुमन की॥

बारि जात बारि जात पारिजात पारिजात मालती बिदारि जात सौधन की भरी सी। मा-

खन सी मैन सी मुरार मखमल सम कोमल स-रस तरु फूलन की छरी सी ॥ गहगही गरुई गु-राई गोरी गोरे गात श्रीपति बिलौर सीसी ईंगुर सों भरी सी । बीज थिर धरी सी कनक रेख करी सी प्रवाल दुति हरी सी ललित लाल लरी सी ॥ ३० ॥

गोरी महा भोरी तेरे गात की गुराई देखि दिन दिन दामिनी की छाती होति खुधा सी । श्रीपति कमल की कसानी मखमल की बदख-सानी लाल की ललाई लागी मुधा सी ॥ मोम निदरत सो प्रकाश को हरत जोम रोम रोम कुरत छपायन की छुधा सी । सुखमा को ऐन मई हीतल को चैन मई पीवन को मैनमई नैनन को सुधा सी ॥ ३१ ॥

एहो ब्रजराज एक कौतुक बिलोको आज भानु के उदै में बृषभान के महल पर । बिनु जलधर बिनु पावस गगन धुनि चपला चमंकै चारु घनसार थल पर ॥ श्रीपति सुजान मन मोहन मुनीसन को सोहै एक फूल चारु चंचला अचल पर । तामे एक कीर चोंच दाबे है नखत

जुग शोभित है फूल श्याम लोभित कमल पर ॥

घनसार दीपकसिखा सी चपला सी चारु चंपकलता सी नव भानु की विभा सी है। नैनन चकोरन को सींचत सुधा सी कलानिधि की कला सी सुख-सुखमा प्रकासी है ॥ लखि ललचान्यो रूप करत बखान जान्यो श्रीपति सुजान काशी नगर निवासी है। शंभु सालिका सी सुरपाल बालिका सी बाल माल लाल कासी हरतालिका उपासी है ॥ ३३ ॥

चोंथते चकोरै चहूँ ओरै जानि चन्दमुखी रही बचि डरनि दसन दुति दम्पा के। लीलि जाते बरही विलोकि बेनी बनिता की गुही जौ न होती तौ कुसुम सर कम्पा के ॥ राम जी सुकबि ढिग भौंहैं ना धनुष होतीं कीर कैसे छाड़ते अधर बिम्ब झम्पा के। दाख के से भौरा झलकत ज्योति जोबन की भौंर चाटि जाते जो न होती रंग चम्पा के ॥ ३४ ॥

बदन सुधाकरै उघारत सुधा करै प्रकाश वसुधा करै सुधाकरै सुधा करै। चरन धरा धरै मृनालज धरा धरै रु ऐसे अधरा धरै ये बिम्ब

अधरा धरै ॥ पैनै दृग हा करै निहारत कहा करै सु बेनी कबिता करै त्रिबेनी समता करै। सुरति में सी करै सुमोहनै बसी करै बिरञ्चिहू जसी करै सु सौतिन मसी करै ॥ ३५ ॥

मदन तुका सी किधौं राधे कुन्दका सी मनो कञ्ज कलिका सी कुच जोरी हविका सी है। गांसी भरी हांसी सुखमासी मोह फांसी मद जोबन उजासी नेह दीप की सिखा सी है। जाकी रति दासी रस रासि है रमा सी कौन तिलोत्तमा ऐसी रूप सदन बिकासी है। काम की कला सी चपलासी कबिनाथ किधौं चम्पक लता सी चारु चन्द्रिका प्रकासी है ॥ ३६ ॥

कुन्दन से अङ्ग नव जोबन तरङ्ग राजै उरज उतंग लङ्क छीन छबि देत है। बादले की सारी दर दामन किनारीदार बदन की ज्योति मानो हूसन समेत है ॥ सोभनाथ निरखि सुजान अँ-गिराति प्यारी दोऊ कर जोरि मुख मोरि हित चेत है। मदन मलाह के सलाह सों उछाह भरी मानो रूप सागर की ठाढ़ी थाह लेत है ॥

आनन की उपमा जो आनन को चाहै तऊ

आन न मिलैगी चतुरानन बिचारे को। कुसुम कमान के कमान को गुमान गयो करि अनुमान भौंह रूप अति प्यारे को॥ गिरधरदास दोऊ देखि नैन वारिजात बारिजात वारिजात मान सर वारे को। राधिका को रूप देखि रति को लजात रूप जात रूप जात रूप जातरूप वारे को॥ ३८॥

गोरी के हथोरी शिव कबि मेहँदी के बिंदु इन्दु-ती को गन जाके आगे लगे फीको है। अँगुठा अनूप छाप मानो ससि आयो आप कर कंज के मिलाप पात तजि हीको है॥ आगे और आंगुरी अँगूठी नीलमनि जुत बैठो मनो चाय भरो चटुआ अली को है। छबि कै छला सों कोमलाई सों ललाई दौरि जीतत चुनी को रँग छोर छिगुनी को है॥ ३९॥

उज्जल अखण्ड खण्ड सातयें महल महा मण्डल चबारो चन्दमण्डल की चोटहीं। भीतरहू लालन की जालनि विशाल जोति बाहिर जुन्हाई जगी जोतिन के जोटहीं॥ बरनति बानी चौंर ढारति भवानी कर जोरे रमा रानी ठाढ़ी

रमन की ओटहीं । देव दिगपालनि की देवी सुखदाइन ते राधा ठकुराइन के पायन पलोटहीं ॥ ४० ॥

देव महा सुन्दरी त्रिलोकसुन्दरी के दृग वृन्दारक-वृन्दनि को मन्दर उदार होत । लागत चरन सरनागत नरन अनुरागत अरुन रूप उपमा अपार होत ॥ देखि देखि दीन दुखी होत वसुधाधिप बुधाधिपति ऊपर सुधा सहस्र धार होत । एक ओर कुटिल लटाच्छ ही की कोर कोटि लच्छ रच्छ ससपच्छ जरे लखि छार होत ॥

आई बरसाने तें बुलाई वृषभानुसुता निरखि प्रभानि प्रभा भानु की अथै गई । चक चकवानि के चुकाए चक छोटिन सो चौंकत चकोर चकचौंधी सों चकै गई ॥ नन्द जू के नन्द जू की नैननि अनन्दमई नन्द जू के मन्दिरनि चन्द मई छै गई । कञ्जनि कलिनमई कुञ्जन अलिन मई गोकुल की गलिन नलिनमई कै गई ॥४२॥

गोरे मुख गोहरैं सु हँसत कपोल बड़े लोचन विलोल बोल लोने लीन लाज पर । शोभा लागे लाल लखि शोभा कवि देव छवि गोभा सो

उठत रूप शोभा के समाज पर ॥ बादले की सारी दरदामन किनारी जगमगी जरतारी झीनी झालरि के साज पर । मोती गुहे कोरनि चमक चहुँ ओरनि ज्यों तोरनि तरैयन की तानी द्विज-राज पर ॥ ४३ ॥

फटिक-सिलानि सौं सुधाख्यो सुधामन्दिर उदधि दधि को सो अधिकाई उमगै अमंद । बाहिर तें भीतर लौं भीति ना दिखैये देव दूध को सो फेन फैल्यो आँगन फरसबंद ॥ तारा सी तरुनि तामें ठाढ़ी झिलमिल होति मोतिन की जोति मिल्यो मल्लिका को मकरन्द । आरसी से अम्बर में आभा सी उँज्यारी लागै प्यारी राधिका को प्रतिबिम्ब सो लगत चन्द ॥ ४४ ॥

जोतिन के जूहनि दुरासद दुरूहनि प्रकास के समूहनि उजासनि के आकरनि । फटिक अ-टूटनि महारजतकूटनि मुकतमनि जूटनि समेटि रतनाकरनि ॥ छूटि रही जोन्ह जग लूटि रही दुति देव कमलाकरनि फूटि दीपति दिवाकरनि । नभ सुधासिंधु गोद पूरन प्रमोद ससि सामुद विनोद चहूं कोद कुमुदाकरनि ॥ ४५ ॥

छीर की सी लहरि छहर गई छिति माँह जामिनी की ज्योति भामिनी को मानु ऐंठो है। ठौर ठौर छूटत फुहारे मानो मोतिन के ढेर बनु पाको मनु काको न अमैठो है॥ सुधा को सरोवर सो अम्बर उदित ससि मुदित मराल मानो पैरिबे को पैठो है। बेल के बिनल फूल फूलत समूल मानो गगन ते उड़ि उड़गन जनु बैठो है॥ ४६॥

माँग सिंदुरारी तन तरुन अरुन-जोति बेंदो रबि बन्यो छबि पुंज उघरतु है। सघन जघन कुच सकुच दबीच दबी उचकि उचकि लङ्क लचकी परतु है॥ जोबन वनक बने तन में तनक देव भूषन कनक मनि आभा उभरतु है। बेसरि को मोती सुधाबिन्दु सो चुवत मुख इन्दु सो उबतु बूड़ि बूड़ि उछरतु है॥ ४७॥

आनन समान प्यारी कहै कवि हनुमान उपमान आनन मो चित्त में पगत है। सारस को सारस न देखियतु आठो जाम आरस मैं आरस सुभाइ उमगत है। भूपर नभूपर न बिरच्यो बिरंचि दूजो भो न ऐसी भान मैं महान जो ज-

लत है । बिश्व बसुदाकर सु मोह्यो जसुदाकर सुधाकर सुधाकर सुधाकर लगत है ॥ ४८ ॥

कैधों सप्तरिषिन के मखन की सिद्धि-पुंज हंस हंस चखन के मनिन की जोत है। चपल चमक की चहूँघा चकचौंधे कौंधे नेक हँसे दाड़िम दसन दुति होत है ॥ जगर मगर जागे सगर बगर चारु चाहि चाहि चक्रित चकोरन को गोत है। दुगुनो दिनेस तें चतुरगुनो चन्दहू तें हनुमान प्यारी तेरो आनन उद्दोत है ॥ ४९ ॥

पलका तें पद भौन-भूमि पै धरत नेक झलका परत ततकाल पग-तल मैं। नाइनि गुलाब-झावों झाँवति जौ हरे हरे झांई परै आनन झँवाई परै वल मैं ॥ हनुमान कसमीर आदि तैं अलेपतहू ऊबी रहै आपने ही अंग परिमल मैं। सुरजा मैं नागजा मैं नगजा मैं जलजामे सुकुमार देखी वृषभानुजा सकल मैं ॥ ५० ॥

बाँकी चारु चन्द्रिका बिराजै भाल बाँकी खौरि बाँकी भौंह चंचल चितौन चख बाँकी है। बाँकी नकबेसरि मधुर मुसक्यानि बाँकी कहै हनुमान बाँकी अधर लला की है ॥ सुखरासि

भूषन सिंगार चन्द्रकला कीन्हे बाँकी परजंक बैठी मूरि करुना की है। झुकिझुकि झूमिझूमि झाँकी करैं देवबधू कहैं अनुपम सिरी राधिका की झाँकी है ॥ ५१ ॥

कर जोरे किन्नरी तिलोत्तमा तँमोर लीन्हे चौंर चतुराननी करत छवि छाकी है। छत्र लै नछत्रपतिनी हूं नचै रंभा ठाढ़ी मकर पताकी बारी कलपलता की है ॥ जमला न राधिका सी कमला है हनुमान कौन कहै रसना फनेस हू की थाकी है। तलातल बितल रसातल महातल की अतल सुतल कीने पगतल ताकी है ॥५२॥

अम्बर अतर चोवा अम्बर सो चुनि चुनि ल्याइ सहचरी सोंधो जाति न्यारी न्यारी को। सुबरन संपुटनि आनी है रतनमनि पुहुप समूह देव आने बन क्यारी को ॥ मन्द हास सुन्दरी के भए सब मन्द दुति चन्दहू तें उदित अमन्द दुति प्यारी को। पूनो सो नखत जाल नूनो सो मसाल पुंज सहजही दूनी दुति पून्यो की उज्यारी को ॥

सोने में सुरंग सब वैसई लसत अंग जगमग जोबन जवाहिर सो संग तास। रूप तरु काठ

काम कन्दुक से सोहैं कुच चन्द्रमा से आनन
अमन्द दुति मन्द हास ॥ सोभा की निकाई देव
काम की निकाई हूते नीकी भार भूषन भ्रमर
भ्रमैं आस पास। चौगुनी चटक तन चीर की
चटकहू तें सौगुनी सुगन्ध तें शरीर की सहज
बास ॥ ५४ ॥

चोवा सों चुपरि किस केसरी सुरंग अंग केसरि
उबटि अन्हवाई है गुलाब सों। अतर तिलौंछि
आछे अम्बर लै पोंछि औंछि छतिया अँगोछि हँसि
हँसि रस भाव सों ॥ कटि मृगराज कैसी मुख
है मयङ्क मानो तीखे दृग देव गति सीखी मृग-
साव सों। पैन्हि पीरो चीर चारु चौकी पर ठाढ़ी
भई चाँदनी सी प्यारी पै उँज्यारी महताब सों ॥

भोजन कै भामिनी भवन बीच ठाढ़ी भई
चूनी से चरन चारु चौकी रङ्ग मेज पर। पन्नन के
पानदान पानन की बीरी भरि नीरी करि दीन्ही
लीन्ही मन की मजेज पर ॥ फूलन के हार भरे
भौंरन के भार देव आली पहिराए ते सोहाए
तन तेज पर। सौ सौ ससि को सो आस पास
तें उदो सो करि आनि बैठी सीसा के महल
सोंधी सेज पर ॥ ५६ ॥

सहज बिलोकि फँसि जात मन कैसी होइ मन्द मुसुकानि बानी फूल से झरे परैं । द्विज बलदेव रंग सोने तें सहसगुनो जीवन को लाभ लहि हरषि हरे परैं ॥ सुचि सुकुमार प्रभा मार से सरल मई राजित सुगन्ध परिमल के तरे परैं। ससि सम आनन को जान न प्रमानन पै सानन बिलोकि मृग कानन डरे परैं ॥ ५७ ॥

जानै भेद कबिताई गौरव गहे रहत परम प्रसन्न मुख हास छबि छ्वै रह्यो । द्विज बलदेव कहैं कंचनलता सी चारु चन्द ज्यों उदित भ-रिरूप रस च्वै रह्यो ॥ आलस ककुक अँगिराय झेलि सी करत बलित बसीकरन बीज बर व्वैरह्यो। आई है तरुनताई याहि ते उचोहैं कुच सुबुधि सुगन्ध को प्रकास अंग ह्वै रह्यो ॥ ५८ ॥

राजत रँगीली रंगभौन रसमाती तहां जा-गत झरोखन तें जोतिन को वृन्द है । ज्वाला-मुखी मन्दिर प्रसिद्ध सो दिखात वहां कैधौं स्वर्ग-सैल की गुहा मैं प्रभा कन्द है ॥ भन रघु-नाथ लोग लखत बिचारैं मन तारागन चन्द है कि भानु है कि कुन्द है। चन्दहू तें दूनो दीप्त

कन्द सदा पूनो सम होत है न ऊनो मुख बाला बाल चन्द है ॥ ५९ ॥

मृदु मखतूल तूल कमल गुलाब फूल मखमल-सेज पै सम्हारे पाय धरती। कच कुच भारन सों दर चलहारो वेग धारत में कज्जल महावर को डरती ॥ भनै रघुनाथ है स्वरूप मुख सोभा धाम निज मृदुता मों रति रम्भा को निदरती। अति सुकुमारी प्रानप्यारी रति रङ्ग समै कैसे प्राणप्यारे को निसङ्क अङ्क भरती ॥ ६० ॥

सुन्दर सुरङ्ग नैन सोभित अनङ्ग रङ्ग अङ्ग अङ्ग फैलत तरंग परिमल के। बारन के भार सुकुमारि को लचत लङ्क राजै परजङ्क पर भीतर महल के ॥ कहै पद्माकर विलोकि जन रीझें जाहि अम्बर अमल के सकल जल थल के। कोमल कमल के गुलाबन के दल के सुजात गड़ि पायन बिछौना मखमल के ॥ ६१ ॥

सारी जरतारी भीम भागी छबिवारी प्यारी न्यारी जोति होति कछू रति सो छपाय जात। सुधि बिसराय ललचाय मुसुक्याय नाथ नेह रोपिवे को हिये भूमि सी नपाय जात ॥ हेम की

सी बेली अलबेली जो धरत डग कांपि जात लङ्क उर सङ्कन कँपाय जात। दबि जात दामिनी द-बकि जात चंद शोभा तपि जात काम-बाम अं-गनि समाय जात ॥ ६२ ॥

केसरि कलित पचतोरिया ललित लाल ल-हँगा लसत लङ्क लोने पर घेरदार। जगमगे ज-ड़ित जड़ाऊ पग पायजेब पङ्कज प्रभनि प्रभा पांवड़े गड़ेरदार ॥ सदानंद सुंदर सघन घुघुरारे कच कंचुकी पै डारे अहि कारे मनो फेरदार। ऐंड़दार ऐनिन मरोरदार तोरदार करत कजाकी कजरारे नैन कोरदार ॥ ६३ ॥

कंद प्रतिबिम्ब ऐसो जानि परै जाके आगे नाथ छबि आनन अनूप ब्रह्मगानी के। लोचन कुरंग जलजात मीन खञ्जन के रञ्जन रसीले मद भञ्जन भवानी के ॥ और सब अंग की निकाई मैं कहां लौं कहौं अंगन की जोड़ कौन राधा ठ-कुरानी के। प्यारी के चलत ऐसे लसत धरा में जैसे पांवड़े परत हैं बनात मुलतानी के ॥ ६४ ॥

जोबन उँजारी प्यारी बैठी रंग रावटी में मुख की मरीचें वो दरीचें बीच झलकैं। भूधर

सुकवि बांकी भौंहें मन मोहें खरी खञ्जन सी आखैं मन रञ्जन वै पलकैं ॥ सीसफूल बेंदी बंदी बीरो और बंदन की चंदन की छबि हिये बीच बीच झलकैं । कोरवारी चूनरी चकोरवारी चितवनि मोरवारी बेसर मरोरवारी अलकैं ॥ ६४ ॥

भृकुटी तनी को लट नागिन फनी को देव प्यारे लखि नीको लगै फूल्यो कंज फीको है। मैन कमनी को नैन बान की अनी को चोखि चैन रचनी को हौस हुलसन नीको है ॥ रूपरस नीको कहा रमा रमनी को गजगति गमनी को सौव जीव मुरनी को है। बेनी बंद नीको रुख हास मंद नीको मुख चंदहू ते नीको वृषभान नंदनी को है ॥ ६५ ॥

गरब गुरज पै चढाई तोप कोप करि सौतिन जखीरा कियो जोबन जमा को है। भनत कविन्द अभरन भार भारी भट नूपुर नगारे नौबतीन को भमा को है ॥ मैंन गढ़पति आगे लड़ै नैन सैन दैकै छूटत कटाच्छ बान लागैं उर जाको है। हांको चहुघां को करि प्यारो लेन चाहै प्यारी तेरो रूप गढ़ ग्वारियर हू ते बांको है ॥

रात हरी चांदनी विलोकिवे को रनिवास सगरी बुलाई मोद मन्दिर मैं भरि गो। रघुनाथ ता समै की सोभा की समाज देखि रीझि रही मोपै न बखान कछु करि गो॥ घूंघट के खुलत दुलहिनी के आनन ते दसहू दिसान मैं प्रकाश ऐसो अरि गो। ढरिगो गुमान तम सौतिन के जी को झटू तारन समेत तारापति फीको परिगो॥

अङ्ग तेरो केसर सो करिहां केसरी कैसी केसन की सर कैसे करि सकै को तमै। कहै कवि गङ्ग आछे छवि सों छबीले नैन नीलेज न लिन ऐसे नाहीं देखे होत मैं॥ अहे हे अहीरी तू धौं इहौ कछु जानति है काके भाग औतरी है तो सी तेरे गोत मैं। तरुनी तिलक नन्दलाल त्यों तिलक ताकि तो पर हौं वारौं तिल तिल कै तिलोत मैं॥ ६८॥

कवि पजनेस पुन्य परम विचित्र भूमि केतिक फनूस झाड़ जोतें जरै ज्वाला सी। करत प्रदोष व्रत पूजन किसोरी गोरी डेरें करि आरती उजेरें सील साला सी॥ मुकुर नवीन तें निहारि वर बिन्द नीकी भिदुरावली सदीपदान

वहु बाला सी । मानो व्योम गंगा की गँभीर धीर धरा धसी दीपक चढ़ावे देवकन्या दीप माला सी ॥ ६९ ॥

रङ्ग भरी रस भरी सुन्दर सुगन्ध भरी सुख भरी पैन ऐन नैन मैनका सी है। दर्पन सी देह तैसी नेह की नई नवेली व्रज बनितान ऐसी सुरपुर बासी है॥ आलम सुकवि लोने सोने के सरोजहीं तें फूलही के भारे भर पान की लता-सी है। चन्दन चढ़ाय चारु चांदनी सी छाय रही चन्द्रमा सी मोती सी चमक चन्द्रमा सी है॥ ७० ॥

चारु मुख चन्द ते अमन्द कला दीपति है रूप सुधा वृन्दन के बुन्द फुटि के रहे। चिरगंध गलित मदन्ध अन्ध चञ्चरीक मन्दिर के अन्दर चहूँघा जुटि के रहे॥ घूंघट के पट में लपेट रह्यो जात जाल सौतिन बिसाल बिष घूंटि घूंटि के रहे। एक छिन अच्छन छबीली छबि देखनि को गैलनि में छोह भरे छैल छुटि के रहे॥ ७१ ॥

अङ्ग नई जोति लै बरङ्गनो विचित्र एक आं· गन में अङ्गना अनङ्ग कैसी ठाढ़ी है । छबि की

सी उजियारी गोरे तन सेत सारी मोतिन के माल सो जुन्हैया जनु बाढ़ी है ॥ आलम सो आली बनमाली चल देख दुति कनक सुगढ़ की सी रूप गुन गाढ़ी है। देह की दमक वाके चीर की चमक मानो छीरनिधि मथि कैधौं चन्द मथि काढ़ी है ॥ ७२ ॥

सोरह कला को चन्द पूरन मुखारविन्द सोरह सिङ्गार किये सोरह बरस की। आभरन बारह कनक बानी बारह की बारहो चरन चूमे चोप कंज रस की ॥ आठो दन्त चौकनमों आठो अङ्ग हीरा हार आठहू बरंगना सो विधिना सरस की चार खग चार मृग चार फल कीसी छबि चार भुज आरत निकाई है दरस की ॥७३॥

जमुना के आगमन मारग में मारुतन भौंरन की भीरनि पटे से लखि पाये हैं। सन्तन सुकवि सुख खान पदमिनी तेरे रूप के तरङ्गनि अनंग दरसाये हैं ॥ बाहर कढ़न कहैं तोसों ते अयानी कौन लैहै बदमामी घेर घर घर छाये हैं। पट की लपट लपटति ता दिना ते आज मनो उन गलिन गुलाब छिरकाये हैं ॥ ७४ ॥

हारही के भार उर भार ना सँभारे नारि अलप अहार रस बस के अहार है । सीरेते सिरात ताते ताती ह्वै ह्वै जाति डोलै पौन के परस प्यारी पान की सी डार है ॥ कहै कवि आलम न रतिहू न रम्भा और मैन का घृताची ऐसी रूप की अपार है । बानिक बिचित्र और चित्र मैं न ऐसी कोऊ चित्र लिखि पूतरी जियाई करतार है ॥ ७५ ॥

लहलही लहरैं लुनाई की उदित अंग उचकै कुचन कैसी कंचुकी यों गचकी । मन्द पग धरति मरू करि गयन्द गति चन्द्रमुखी चांदनी चकित चाह सचकी ॥ कैसे घनश्याम वह बाम बन धाम आवे घाम के लगे ते कामलता जाति पचकी । अति सुकुमार सिसकत भार हारन के बारन के भार कई बार लंक लचकी ॥ ७६ ॥

पलिका ते पांय जौ धरति धाम धरनी में छाले परे पग मांझ पैंड़के गवन तें । लीनै जौ तमोल तौ तो ताप आवै बलि भद्र होत है अरुचि पान पीक अचवन तें ॥ बारन के भार और चीरहू के तम भार यातें नहीं बाम होती

बाहिरे भवन तें । लागे जौ समीर तौ तो पूर परै सौतिन के फल ज्यों उड़त अलि पंख के पवन तें ॥ ७७ ॥

चरन धरै न भूमि विहरै जहांही तहां फूले फूल फूलन बिछाई परजङ्क है। भार के डरन सुकुमार चारु अंगन में अंग ना लगावै राज केसर को पङ्क है ॥ कवि मतिराम लखि बातायन बीच मुख आतप मलीन होत बदन मयंक है। कैसे सुकुमारि वह बाहिर विजन आवै विजन बयारि लगे लचकत लङ्क है ॥ ७८ ॥

इति छबि वर्णन ॥

अथ केलि कला वर्णन ।

नथ की चलन कल किङ्किनी कलन हिय हार की हलन छबि उरज उतंग की । लंक की लचक परजंक की मचक इत उत की हचल रंग रचक सुसंग की ॥ स्वेद की झलक भरि नेह की छलक कबिराम जू ललक कोक मदन बिहङ्ग की । जोम की जमक बिपरीत की गमक तहां तिय की हुमक अरु कुमक अनङ्ग की ॥ १ ॥

दम्पति सुरति बिपरीत में रमत सब कोक की कलानि के अखिल अवधारे हैं। भनत कविन्द बिहसत बतरात सतरात अंग अंगन अनंग रंग भारे हैं। उचटी ललाट तें समेत बेंदी मांग मोती पर्यो केस पासन छूमि उरझारे हैं। बदन नक्षत्र पति छत्रपति हूकुम तें कूदे मनो तम पै सितारे बांधि तारे हैं ॥ २ ॥

रति बिपरीत रंग रसिक बिहारी संग अंग देखे प्यारी के अनंग हरषत है। आसन बिधान के बिबेकन बलित चाल त्यों हीं लाल कोक की कलानि करषत है ॥ भनत कबिन्द्र हार टूटे श्रम जल छूटे सौतिन को भीजत सोहाग सरषत है। मांग मोती माल छ्वै छ्वै श्याम पै सुढार गिरे बूंदु मानो तम पर तारे बरषत है ॥ ३ ॥

प्यारी बिपरीत रति करै प्यारे पीतम सों दुहुन के अंगन अनंग हेर हरखै। भनत कबिन्द बेनी पीठही पै परी डोलै पन्नगी सुबाह हेम बल्लकी सो करखै ॥ नख रद खण्डन चतुर नारि चुम्बन कै सीवी करै पीवै त्यों न सीवी प्रेम प-

रखै। भाल ते उचटि स्वेदकन परै कुचन पै बून्द मानों ईस पै सुधा के बुन्द बरखै ॥ ४ ॥

सजल जलद पर दामिनी लसत कैधों कामिनी को रूप रतिपति सो हरत है। बदन मुरत पिय मुख सों जुरत कैधों कमल के फूल सों कलानिधि मिलत है ॥ मण्डन सुकवि श्रम स्वेद तें सलिल होत देह तें निकसि निज नेह पिगलत है। टूट टूट मोती सीसफूल ते गिरत कैधों मेरे जान तरनि तरैया उगलित है ॥ ५ ॥

जीति रति कामहिँ करति रस रीति तहाँ प्रीतम ते दुहू रचि बिपरीत रति है। मची सिसकार रसना की झनकार जहाँ संभु मुखचन्द्रमा की छबि छलकति है ॥ कटि लफि लफि लचकत कच भारन सों हारन तें धोरै उर ओप उलहति है। पीठ पर बेनी मृगनैनी के लुरत मानों नागिनी सुमेरु के सिला पै लहरति है ॥ ६ ॥

साँवरे रसिक रस बस बिपरीत रची प्यारी के लजोहैं नैन मन को हरत हैं। मन्द मन्द मेखला की धुनि सुनि दत्त कबि चेटुआ मरालन के मन पकरत हैं ॥ झूमती हैं अलकैं छबीली

मुख ऊपर यों मानो बाल व्याल सुधा चन्द तें भरत हैं। टूट टूट श्रम जल बुन्द यों परत मानों कनक-लता तें मुकताहल भरत हैं ॥ ७ ॥

फैलि रहे चहूँदिसि चिकुर समूह घन बरषत सलिल सुमन बुन्द भारी है। टूट उछलत मुक्ताहल बलाक दल भूषन सबद मोर घोर अनुकारी है॥ प्रफुलित गात सब ललित कदम्बन वदम्बन के अङ्ग इन्दुवधू छबि धारी है। आनँद वितानमई लता उलहत मानो प्यारी विपरीत रति पावस निकारी है ॥ ८ ॥

लचकै ललित लङ्क मचकैं उरोज ऊँचे हचकै हमेल तिय हियन परै परै। नैनन को चाप धरे मूंद मुख साँस करै फिर फिर अङ्क भरै मिलत गरै गरै॥ श्रीपति सुहात बारिजात से बदन पर रूप सरसात छूटे मुकता लरै लरै। मेरे जान कातिक को पूरन मयङ्क पर चहुँघा नखत माल गेरत हरै हरै॥ ६ ॥

सी करन प्रिया को बसीकरन पी को श्रम सी करन सोचियत पति सुख भूल कै। मेखला के रव मान मेख लागे देवन के सुखदेव नूपुर

झलक तैसे भूल कै ॥ श्यामा के लजौहैं नैन सोहैं श्याम नैनन के खुलत मुदित त्यों त्यों खुलत अतूल के। जानकै उदैज इन्दु भासमान कोसमान कोस मानो होति इन्दीबर फूलफूल के॥

छूटत लपट लपटत फिर छूट छूट थकत न दोऊ बिहरत बडी बेर के। लङ्क लचकत अङ्क भरत निसंक परजंक पर राखि मुकताहल के ढेर के॥ ता समै कहत संभु गोरी के गरे ते टूट छूट चलो सुरत करत फेर फेर के। कुच बीच अटको बिराजत है हार मानो धसी गंगधार फेर सिखर सुमेर के ॥ ११ ॥

लागी है रचन बिपरीत रति बाल वह मानि कै बचन निज बालम सपथ को। कोक की कलानि माहि सिव कबि प्रेम बस पूरन मनोरथ करति मनमथ को॥ श्वसित उझकि झकि श्रवन समीपन तें जटित जवाहिर तखोना बहु गथ को। मानहु अकास ते प्रजास कर आस पास टूट्यो टूक ह्वै है चक्र चन्द्रमा के रथ को ॥१२॥

रगमगी सेज पर जगमगी शोभा चारु मनिमय मन्दिर मयूखन अथाह की। उदै नाथ तामें

प्रानप्यारी अरु प्यारेलाल कोक की कलान केलि करत सराह की ॥ किङ्किनी की धुनि तैसी नूपुरन नाद सुनि सौतिन के बाढ़त बिखाद पीर दाह की। त्रिभुवन जीति के उछाह की बजत मानो नौबत रसीली मनमथ पातसाह की॥१३॥

राधा बनमाली संग करत अनंग ऐम घिरत चहूघां बास फूलन के ढेर की। उदैनाथ सुकवि सोहाई सखी श्रौनन की किंकिनी झनक काम नौबत कै जेर की ॥ मोतिन को हार चारु लटको कुचन पर अटको यों डोलो करै शोभा घन घेर की। पांत पांत ह्वै कर नक्षत्र सब देत मानो पुन्य हेतु पूरन प्रदछिना सुमेर की ॥ १४ ॥

रति विपरीत रची दम्पति गुपति अति मेरे जान मान भय मनमथ नेजे तें। कहै पदमाकर पगी यों रस रंग जामें खुलगे सुअंग सब रंगन अमेजे तें ॥ नीलमनि जटित सुबेंदा उच्च कुच पै पस्यो है टूट ललित ललाट के मजेजे तें। मानो गिस्यो हेमगिरि शृङ्ग पै सुकेलि करि कढ़ि के कलंक कलानिधि के करेजे तें ॥ १५ ॥

बाल बैस बाल कोक रति में कुसल अति

कीनी रति पति बिपरीत की त्रनोत है। वपुकर नाह सुक नैन मूंदे वलिभद्र देखे मुख सुख भयो मोद को उदोत है॥ एते में पकर दोऊ पान तान राखे भाखे मृदु मृदुबैन जैसे कूजत कपोत है। टूटो मोती मांग ते सिंदूर भरो राजै अति मानो तारा मण्डल ते तारापात होत है॥ १६॥

कवि पजनेस केलि मन्दिर चिराग माल पन्नन के परम प्रभा सी प्रभा फूटि फूटि। हीरन जटित जेवदार परजङ्क पर दोऊ रहे रति बिपरीत सुख लूटि लूटि॥ दुरद दुरेफन के दर ते ढरत स्वच्छ सुमन गुलाब दल छबि जुत छूटि छूटि। प्रफुलित कंज दल दीरघ हगी के मृदु मुख महताब तें परे से परैं टूटि टूटि॥ १७॥

कवि पजनेस केलि मधुप निकेत नव दर मुख दिव्य घरी घटिका लटी की है। विधु पर वेख चक्र चक्र रवि रथ चक्र गोमती के चक्र चक्रताकृत घटी की है॥ नीवी तट त्रिबली बली पै दुति कोस तुण्ड कुण्डली कलित लोम लतिका बुटी की है। उपटी की टीको प्रभा टीको बधूटी की नाभि टीको धूर्जटी की वो कुटी की संपुटी की है॥

पौन सो उसास आसु बुन्द बारिधारा स्वेद बक पांति मोती लर कारी घटा केस है। नग पुखराज पन्ना मानिक औ नीलम की जगमग जोति जुरि धनुष सुरेस है॥ गरजन आहि कण्ठ ठनक मयूर धुनि चपला चमक टीका टिकुली सुवेस है। मेरे जान लाल आज प्रथम समागम सो प्यारी तेरे आनन पै पावस प्रवेस है॥ १९॥

बाम अलबेली श्याम सङ्ग केलि मन्दिर में ठानी बिपरीत रीत सुखद सुकन्त पाय। छूटे बार टूटे हार बिलुलित भो सिंगार तन को न है सँभार छाकी रति रङ्ग छाय॥ रसिक बिहारी प्रान प्यारी छबि प्यारी लगै चन्दन की बेंदी मिली गोरे मुख ना लखाय। मैन मदमत्त भुज भरत अनँग जङ्ग ज्यों ज्यों मद लाली चढ़ै त्यों त्यों उघरत जाय॥ २०॥

उछलि उछाहन सों ऊधम अनोखो नाधि बरसो अनंद मन भावन के मनपर। कहै पद्माकर कपोलन पै आएँ ढुरि छाए कनसेद सोहाए उरजन पर॥ हारि मानि प्यारी विपरीत के विहार लगि सिथिल सरीर रही सांवरे के तन-

पर। मानहुं मकेलि केलि केतिको कलाकी करि थाको है चला की चंचला की घोर घन पर॥ २१॥

श्याम को महेली ज्यौ लौं पीछे पान लेत रही तौ लौं बड़ भागो आगे अमृत अचै रही। काहे को सु छाड़े वाकी काम आस पूर भई गैल जात पाये लाल लालचन लै रही॥ अनत अ-चिन्त पाये मोहन महल आये हिये सो लगाये दोऊ बाँह बीच दै रही। रस कुच लैहै रानी राधिका की सेज सजि बीच चोर ही को मोर बन्द बल कै रही॥ २२॥

कीनी जानु आसन में दुलही सरासन सी गरे भुज पास सो पकर छबीली को। कालिदास ललक लपेटि लेति दामिनि ज्यों श्याम घनदुति तन गर गरबीली को॥ गहत कठोर कुच कुंकुम कनक रंग चुम्बन करत अग अंग चटकीली को। मैन मद दूम दूम तूल सम तूम तूम लेत मुख चूम चूम राधिका रसीली को॥ २३॥

आजु केलि मन्दिर में छके रंग दोऊ बैठे केलि करैं लाज छोड़ि रंग सो जहकि जहकि। सखी जन कहत कहानी हरिचन्द तहाँ नेहभरी

केकी कीर पिक सो चहकि चहकि । एक टक बदन निहारै बलिहार लैलै गाढ़े भुज भरि लेत नेह सो लहकि लहकि । गरे लपटाय प्यारी बार बार चूमि मुख प्रेमभरी बातैं करै मद सो बहकि बहकि ॥ २४ ॥

आज कुंज मन्दिर अनन्द भरि बैठे श्याम श्यामा संग रंगन उमंग अनुरागे हैं । घन घहरात बरसात होत जात ज्यौं ज्यौं त्यौं हीं त्यौं अधिक दोऊ प्रेम पुंज पागे हैं ॥ हरीचन्द अलकैं कपोलन सिमिटि रही बारि बुन्द चुअत अतिहि नीके लागे हैं । भीजि भीजि लपटि लपटि सतराय दोऊ नील पीत मिलि भये एकै रंग बागे हैं ॥

राधिका रसीली काम सील में जसीली गुन गरब गसीली गरो गहत गुपाल को । कालिदास मृगमद पान पाय कर रंग फूली फूल कलित ललित बनमाल को ॥ पियत पियारी दोऊ अधरन धरि धरि अधर मधुर मधुसूदन मुलाल को। रंग रसहू में सब छके रंगहू में कर दै कर कपोल मुख चूमैं नन्दलाल को ॥ २६ ॥

साजित पलंग पै उमंग भरी अंग अंग रंग रंग

बसन सँवार पैन्हे मुच पै। मोतिन के छड़े पड़े कानन मैं सानदार हीरन के हार बेना बन्दनी सरुच पै॥ ग्वाल कवि कहै तहाँ राजत रसिक लाल ख्याल में बिसाल मन आयो अति उच पै। नैन लगै प्यारी ओर ओठ लगै प्याले कोर जीय लग्यो रति जोर हाथ लगै कुच पै॥ २७॥

आये प्रानप्यारे पाये रहसि रसीली बाम दौरि महि कीनी जोम जंग के झपट सी। रसिकबिहारी मुख चूमि गल बाँह डारो पिय हिय लागी लोह चुम्बक चपट सी॥ परसि कपोल प्यारी करि करि प्यार हेरै कसि भुज भरै सहि मैन के दपट सी। ज्यौं त्यौं सियराति गुलाबन की छुही सी छाती त्यौं त्यौं लपटाति तिय पावक लपटसी॥

सोये गुरुजन दो ए जागत हैं निस समै राखो बहराय तौ लौं बातन बतर के। कुचन के छुवे सब अगङ्ग थरथराय लोचन मुदित कीने अम्बर पतर के॥ बल्ली भो बलित यों छलित छूटी रस रूप भीनी रति रंग पिय सुन्दर सतर के। कैधों खगराज सेज छीरद के बीच पर धरी ब्याल छौनन की कुण्डली कतर के॥ २८॥

कुन्दन की छरी आबनूस की छरी सो लगी सोनजुही मिली कैधों कुवलय हार सों। कैधों चन्द्र चन्द्रिका कलङ्क सो कलित भई कैधों रति ललित बलित भई मार सों ॥ कालिदास का- दम्बिनी दामिनी मिली है कैधों अनल की ज्वाल धस गई धूम धार सों। केलि समै कामिनी क न्हैया सों लपटि गई कैधों लपटानी है जुन्हैया अन्धकार सों ॥ ३० ॥

मुखौ रुख मोरि देति घूघरौ न छोरे देति चूमिबो न भोरै देति बदन मयङ्क की। लाजन ते चूनरी लपेटति न गोवै हरे ररै गरै रोवै हटै हि- लकी न अङ्क की ॥ भनत कबिन्द लाल कर को परस होत धर को मिटै न सरमाई बाल संक की। जकार जकार जाघैं सकार सकार परै पकार पकार पानि पाटी परजङ्क की ॥ ३१ ॥

आली केलि मन्दिर में ल्याई छल बल करि प्यारे पेखि पकरी उछरि परजङ्क तें। भनत क- बिन्द कैसे थिर रहै थोरी बैस पारद को रद कै चपलताई संक तें ॥ नीवी कर धारि रही झनक बगारि रही झलक पसारि रही बदन मयंक तें।

लाल भुज भरी बाल ऐसी तरफरी हाल जाल की सी मफरी उछरि परी अंक तें ॥ ३२ ॥

ल्याई केलि भवन भोराइ भोरी भामिनी को फूल गन्ध के परस कीनी पौन रुख ते। कलित वसन हास तन कुच कमनोय लीनी रहि तिम प्रसून सेज सुख तें ॥ कवि पजनेस भुज भरत हहा के हिय सीही के समेटि साँस नीवी दाबि दुख तें। आह करि उछरी मचोट पन्नगी सी ऐंठ उमठ अरीरी सैं मरीरी काढ़ी मुख तें ॥ ३३ ॥

ल्याई केलि मन्दिर तमासा को बताय छल बाला ससि सूर के कला पै किये दावा सी। धाइ ताहि गहन चहत हरिचन्द जू के घूमि रही घर में चहूंघां करि कावा सी ॥ धोखा दैकै अङ्क में भरत अकुलानी अति अञ्चल चपल सी लखानी मृग छावा सी। आहि करि सिसकि मकोरि तन मोरि पिय करते छटकि छूटि छलकि छलावा सी ॥ ३४ ॥

बैठी बिधु बदनी कृसोदरी दरीची बीच खीच पी निसङ्क परजङ्क पर लै गयो। पजन सुजान कवि लपटी लला के गरे झपटी सु नीवी कर जङ्घन

समै गयो ॥ गोरो गोरो ओरो मुख सोहै रति पीत भीत रति क्रम रत्त ह्वैके अन्त सो रजै गयो। मानो पोखराजतें पिरोजा भयो मानिक भो मानिक भये पै नीलमनि नग ह्वै गयो ॥ ३५ ॥

(मध्या) चैत चांदनी के कैधों चन्द अवलोकन ते छीर निधि छीर के सपूर पूर उमगे। कहै चिन्तामनि मन आनँद मगन ह्वै के विहरि हँसति सु परम प्रेम सो पगे ॥ अधखुली अँखिया सुरत सुख रस बस मानो भोर अधखुले कमलन में खगे। प्यारी के सकल तन श्रम जल बुन्द सोहैं कनक-लता में मुकताफल मनो लगे ॥ ३६ ॥

साटन के सुरुख बिछौना बिछे सेज पर रङ्ग सेज सेज मन मौज की निसा करै। अतर बिना ही तिय तन में अतर भासे सतर उरोजन पै गोटन की भाँकरै ॥ ग्वाल कबि प्यारे लाल नीवी को बढायो कर सरकि चली सी आगे आनन चहाँ करै। आँगुरी ते ना करै अु भौंह ते मना करै सु नैनन में हाँ करै पै मुख ते न हाँ करै ॥

अंचल के ऐंचे चल करति दृगञ्चल की चञ्चलता ते चञ्चल चलै न भजि द्वारे को। कहै पदमाकर

परै सी चौंक चुम्बन में छलन छपावे कुच कुम्भन किनारे को ॥ छाती के छुये तें परै राती सी रिसाय गलबाहीं के किये पै करै नाहिये उचारे को। ही करति सीतल तमासे तुंगती करति सी करति रति में बसी करति प्यारे को ॥ ३८ ॥

पौन कर छूटी वन्द बूटी सी बधूटी देव टूटी मोती माँग छूटो छहरैं सरप सी । अंग अंग आरस सुधारस सरस प्यारी अंग अंग आय कर आतप अरप सी ॥ मुखचन्द चन्द्रिका उदित रति मन्दिर में नीली घन पीली स्याम दामिनी दरप सी । उचकी उचाँकी चकितै सी सीसमन्दिर तें कन्दरप दर्प दावानल के झरप सी ॥ ४६ ॥

अधखुली कंचुकी उरोज अध आधे खुले अधखुले वेष नख रेखन के झलकें। कहै पद्माकर नवीन अधनीबी खुली अधखुले छहरि छराके छोर छलकें ॥ भोर जगी प्यारी अध ऊरध इतै की ओर झाँकि झुकि झमकि उघारि अध पलकें। आँखि अधखुली अधखुली खिरकी ह्वै खुली अधखुले आनन पै अधखुली अलकें ॥ ३० ॥

लामी लामी लटैं लोनी लटकत लंक लौंलौं

लीक लागि लोचन उड़त झकझोरि झोरि। छूट गये सकल सिंगार हार टूटि गल लूटि गए लपटि भुअंग अंग कोरि कोरि ॥ सकुचि सयानी अँगि-रानी प्रानप्यारी बाल प्यारे जसवन्त के निकट तन तोरि तोरि । चोरि चोरि चित हित जोरि जोरि लाड़िले सों छोरि छोरि कांचुकी जम्हात मुख मोरि मोरि ॥ ४१ ॥

बिकसत जात जा को बारिज वदन वेस बि-बिध बिनोदवारे भावन भरति है। निरखि न-खच्छत उरोजन पै लागे परिहास के सकोचन चलति पछरति है ॥ कहै हनुमान मनभावनि सुलोचनी के जागे की खुमारी अँखियान बिहरति है। प्यारी की उनींदी वा अटारी उतरनि आज चढ़ि रही चित ना उतारो उतरति है ॥ ४२ ॥

(प्रौढ़ा) सुखद सुवास परजंक पर राजै उभै भूमि ललचाय मुख चुम्बन लहत है। द्विज बल-देव मुसुकात जात खात पान परसि पयोधर ह-रख उमहत है ॥ फूलं ना समाते बिपरीत रस माते उर हार सुरझाते अध उरध रहत है। सि-

थिल सरीर बाल बिथुल परे हैं मानो सोने स्याम सरिता में पन्नग बहत है ॥ ४३ ॥

राति रतिरंग में रसीली अरसीली बैठी सेज में बिलोकि मौंहैं आदरस धरि कै । बेनी कबि बेनी के खुले हैं कच मेचक वै खैंच पैंच छाए मुख मण्डल बगरि कै ॥ तिन में अरूझे सीस फूल सो अतूल छबि प्यारी सुरझावैं लीन्हे ऐसे कर करि कै । बांधो तम बन्धन बिलोकि दिनकर मानो प्रात अरबिन्दन छुड़ायो बंधु लरिकै ॥४४॥

रचि बिपरीति रति प्रीतम की प्रीति प्यारी जामै अति छाजै कोक सकल कलान की । कबि हरिकेस बिगलित केस बेस दुति गलित कांति अहि ललित ललाम की ॥ लचकत कटि मचकत किङ्किनी की कल हासी सो करत है मराल अ-बलान की । कर ताम रसन मसक जब गहै प्यारी प्यारे के मिटत टेव सकल छलान की ॥ ४५ ॥

करि रति रंग पति सग ते अलोनी प्रात उठी अंगरात ओपैं उलही अपार है । भनत कबिंद छूटे सकल सिंगार है न सौत मुखतार है निहारे टूटे हार है ॥ फबि रही कलित कपोलन पै पीक

लीकैं बलित नखच्छत उरोजन अगार है । मुर रही बेसर सिकुर रही सारी अंग फुर रही आ-लस बिथुरि रहे बार हैं ॥ ४६ ॥

अन्धकार धूमधार समर सकूटे वार बिथुरे बिथुरि रति अन्त सेज पर में । कालीदास स्याम संग सोई रस बस बाम काम की सी नीकी बाम काम केलि घर में । नवला को नाभी केहुनी दै कान्ह कुच गहि सोए जोए रतन अँगूठी सोहै कर में । मेरे जान कारो नाग बामी ते निकारि फन राख्यो मनि मण्डित सुमेरु के सिखर में ॥४७॥

चहचही चुभकै चुभी है चौक चुंबन की लह लही लांबी लटैं लपटी सुलङ्क पर । कहै पदमा-कर मजानि मरगजी मंजु मसकी सुआँगी है उ-रोजन के अङ्क पर ॥ सोई सरसार यों सुगन्धन समोई सेज सीतल सुलोने कोने बदन मयङ्क पर । किन्नरी नरी है कै परी है छबिदार परी टूटि सी परी है कै परी है परजङ्क पर ॥ ४८ ॥

(परकीया) सोए सब लोग तुम आए भले जोग मेट्यो बिरह बियोग उर आनंद निपट के । काहू को न डरो परजङ्क मैं ले परो परिरम्भ प्यारे

करो तुम्है कैसे कोऊ हटकै ॥ लीलाधर पीतपट न्यारे करि धरो परिहरो बनमाल जौन नेकहू न अटकै। डेहरि के वा तरफ केहरि ननद परी है हरि सँभारो पग जेहरि न खटकै ॥ ४९ ॥

आली केलि मंदिर के आस पास ठाढ़ी सुनैं प्यारी बनमाली की बनक बतियान की। कालिदास परम हुलासन मैं अंकभरै लाल लीनी आसन मे नवला लजान की ॥ अति अलवेली की नवल रति कूजनन सुनि चली अवली किलकि सखियान की। मची एक बेरही खनक चुरियान की घनक घुघुरुन की झनक झबियान की ॥

गोकुल में गोपिन गोविन्द संग खेली फाग रात भर प्रात समै ऐसी छवि छलकैं। देहैं भरी आलस कपोल रस रोरी भरे नींद भरे नैनन कछूक झपैं झलकैं ॥ लाली भरे अधर बहाली भरे मुखपर कवि पदमाकर विलोकैं को न ललकैं। भाग भरे लाल औ सोहाग भरे सब अंग पीक भरी पलकैं अबीर भरी अलकैं ॥ ५१ ॥

(गनिका) मालना जुही की नीकी चम्पा की कली की फीकी जलज जमात जेबदार पान पनतें। कुन्दन की शोभा मुन्द सब सरदार रूप मञ्जरी न मञ्ज, गही हाड़ू गञ्ज गन तें ॥ मालती निवारी क्यारी सेवती बिचारी बरी कहत कहारी देह जारी जात जन तें। आली चाह चाली चित हित की खुमाली आवै माली हाथ डाली लै गुलाब गुलसन तें ॥ ५२ ॥

छुअन न देति छाती छबि सों छबीली नारि कौतुक अनेक करै नींद मैं समोई है। कहै कबि दूलह त्यों परसै न पावै पीय झुकि झहराय पट तानि देह गोई है ॥ बय की कलेस सहै पै ना रति रंग चहै तिय के चरित्र मित्र जानत न कोई है। पहले अनूढ़ा भई ब्याहे पर ऊढ़ा भई गौने में नवोढ़ा ह्वैकै पीकै साथ सोई है ॥ ५३ ॥

आरस सों आरत सम्हारत न सीस पट गजब गुजारति गरीबन की धार पर। कहै पद-

माकर सुगन्ध सरसावै सुचि बिथुरे बिराजैं बार हीरन के हार पर ॥ छाजत छबीले छिति छहरि छरा के छोर भोर उठि आई केलि मन्दिर के द्वार पर । एक पग भीतर सु एक देहरी पै धरे एक कर कंज एक कर है किवार पर ॥ ५४ ॥

इति श्री मनोजमञ्जर्य्यां प्रथम कलिका समाप्ता ॥